प्रधानमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल का लाल किला पे भारत के स्वतन्त्रता दिवस पर अभिभाषण

भाषा - हिन्दी

अवधि- 32 मिनट

टेप नं. पी.एम 15/41329

पी.एम. 15/41330

बहनों, भाइयों, घरों से दूर बैठे, फौजी, जल सेना, वायु सेना, के बहादुर जवानों, खेतो खलिहानों में काम करने वाले किसान, मेहनतकश भाइयों, विदेशों में बसे मेरे हम वतनों प्यारे बच्चों आज आजादी की स्वर्णी जयंती के मौके पर आप सब को बधाई आज के इस पवित्र दिन में मै उन शहीदों को प्रणाम करता हूँ। जिनके बलिदान और कुर्बानी ने देश को आजाद कराया । उन स्वतन्त्रता सेनानियों को, उनके परिवारों को मैं खास तौर पे श्रृद्धांजलि पेश करता हुं । उनकी कुर्बानियों और देश भक्ति की लम्बी गाथा को, सबने मिलकर साम्राज्य के चगुलं से देश कोछुड़वा हमारी सदियों की गुलामी और बेईज्जती को खत्म किया। कुछ नाम तो हमारे सामने आते हैं । जो पहले लाईन मे खड़े थे । उनको सारा देश जानता है। उनके सामने हम सब सर झुकाते हैं । मै आज इस मौके पर भारत की तरफ से उन अनगिनत शहीदों को याद करता हुं । जो बेनामों, गुमनामों मे, जेलखानों में मुसीबतें झेलते रहे । लेकिन सीने में और मन में सदा आजाद भारत को देखने की उमंग थी । ना जाने आपने कभी अशफाकुल्लाह , बिस्मिल का नाम सुना है के नही । ये वहीं थे, जिन्होने जेल की सलाखों के पीछेसे सरफरोशी की तमन्ना का गीत गाया था और फांसी लगाई गयी, फांसी लगने से पहले उन्होने आपके लिए और मेरे लिए एक संदेश छोड़ा था । कि

वौजवानों जो तबियत में तुम्हारी खटके।
याद कर लेना कभी, हमको भी भुले भटके।।
हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर ।
हमको भी मां बाप ने पाला था, दुःख सह सहकर।।
वतन ऐ रूकसत, उन्हे आये ना इतना भी कहकर।
गोद में आंसु जो कभी टपके, रूख से बहकर।
इफन इनकी समझ लेना जी बहलाने को।।

भगत सिंह, राजगुरू, सुखदे जब फांसी के फंदे की तरफ जा रहे थे उनके मुह में उनके लबो में, यही गीत था, मैं आज देश की तरफ से, और अपनी तरफ से उनको प्रणाम करता हूँ। इस पवित्र दिन, कल रात, हम सबने राष्ट्रपति जी को उन महान नेताओं को याद किया। जिनकी कुर्बानी, सोच और लीडरशिप ने हजारों सालों की गुलसमी कसे पिछाड़ दिया था। गाँधी जी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, अब्दुल गफ्फार खाँ, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, राज गोपालाचारी और हमारे विधान के निर्माता अम्बेडकर जी को सब देश वासी एहसानपूर्वक ढंग से याद करते हैं। इस दिन हमारा ध्यान उन लाखों खानदानों की तरफ जाता है। जो देश के बटवारें में, खून और बेइज्जती की नदी में डूबे हुये थे।

ये देश प्राचीन सस्कृति का देश, इन पचास वर्षो में, इस देश की सस्कृति और कल्चर ने भी तरक्की की है। जो एकता की और सेव्युलरिज्म की मुंह बेलती तस्वीर है। हमारा देश अपनी विरासत सम्भले हुए आधुनिकता की तरफ बढ़ रहा है। ये पुराना और प्राचीन देश भी है। नया भी, युवा भी, जवान भी, इस धरती में, कुछ एक ऐसी कशिश है। बाहर से जितनी संस्कृतियाँ, जितनी भाषायें, जितने लोग आये वो इसमें घुल गिल गए। और इस तरह, हर वक्त नहीं विस्म की

जान डाली उन्होने हमारी देश की संस्कृति में, इस मुल्क की सबसे देन हमारे समाज को गणतन्त्र, डेमोक्रेसी, इसमें पचास करोड़ मतदाता, पंचायत से लेके पार्लियामेंट तक अपने प्रतिनिधि चुनते हैं। इस डेमोक्रेसी गणतन्त्र पर हमको नाज है। इस एतिहासिक मौके पर जब मैं लाल किले को दीवार पर खड़े होके आपको सम्बोधित कर रहा हूँ। तो मेरे मन में, इतिहास के कई पन्ने उलट रहे हैं। (खाँसी) जो इस किले की दिवारों ने पिछली एक सदी में देखे, इनकी बात करने से पहले, एक पन्ना जैसे मैने कहा, वो तो कल रात को ही आपने देखा होगा। पार्लियामेंट के सदस्य आधी रात गये जवाहर लाल जी का पचास साल पहले दिया हुआ भाषण सुन रहे थे। गाँधी जी अपनी आवाज देश को एक प्रेणा दे रही थी। नेता जी जो कुर्बानी के मुसस्समा थे, वो कह रहे थे, कि आजादी और कुर्बानी एक ही चीज का नाम है।

इस दिन 15 अगस्त को, प्रभातः को एक नया भारत आशा की उमंग में आखें खोल रहा है। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उस वचन को दोहराया था। जो आजादी के सघर्ष में, सेनानियों ने जान की बाजी लगा, आने वाली पीढ़ियों को दिया था। ये वायदा कौम के साथ था ये वायदा देश के साथ था, पचास साल पहले जहाँ एक तरफ संसद के सेन्ट्रल हाल में कुल्क भविष्य की तरफ देख रहा था, वहां दूसरी तरफ पजाँब, बंगाल और वो इलाके जो बटँवारे में खून में डूब गये थे। शहरो, गलियों, कूचों में साम्प्रदायक्ता का अपना एक दर्दनाक नजारा देख रहे थे। मजहब के नाम के ऊपर, मासूमों के पेट में छूरे थोंपे जा रहे थे, माँओ, बेटियों को सरेआज बेइज्ज्त किया जा रहा था। दहशत पूरे जूनून पर थी। मानवता को सर छुपाने के लिए कोई जगह नहीं मिल रही थी। मेरे जैसे कई लाखों लोग, बड़े, बूढ़े, महिलाये, बच्चे सरहद पार कर के एक वक्त पर हंस भी रहे थे, दूसरी आँख से रो भी रहे थे। आगे बेयकीनी थी, पीछे अंधेरा था। इस दर्दनाक वक्त में भी हम याद करते हैं गाँधी जी को, जिनकी प्रेरणा, उन्होने जिन्होने अपनी जान की बाजी लगाकर भारत के लिए सेक्युलर डेमोक्रेटिक रास्ता चुनवाया था। ये माना गया था और इतिहास ने बाद में इस पर मोहर भी लगा दी कि कोई और रास्ता अगर देश ने चुना होता, तो न ये देश इकट्टा रह सकता था और न ही आगे बट सकता था। हमारा देश तो विभिन्नताओं का देश है। हम लोग अलग-2 धर्मो के मानने वाले हैं। अलग-2 भाषा में बोलते हैं कई दपा हमारे खाने-पीने के ढंग भी अलग-2 थे और कई सदियों तक हमने इतिहास के अलग-2 रूख देखे। आजादी के सघर्ष ने इन विभिन्नताओं को एक लड़ी में पिरोदिया था। विभिन्नताओं में एकता, युनिटी इन डाइवर सिटी का नारा हमारे सीनो पर लिखा गया था। इसके हर अक्षर का मतलब था। कुर्बानी, देशभक्त वतन से प्रेम, भविष्य पर विश्वास, गाँधी जी ने एक अनोखे विस्म की सेनानियों की फौज खड़ी कर दी थी। उनके पास कोई हथियार नहीं थे। और इस हद तक कि हिसाँ और वायलेंस की बात करना भी मना थी। ये वीरता की नई परिभाषा थी। गांधी जी ने इस देश को दे दी थी, जनता को गाँधी जी पर विश्वास था। इसलिए इनके कहने पर वकीलों ने अपने पेशे छोड़ दिये, विद्यार्थी स्कूल और कॉलेज छोड़कर जेल भरने लगे। किसान खेतो से निकल आये। मजदूर कारखाने से हट गये। और सघर्ष के आखरी दिनों में तो बात यहाँ तक जा पहुंची कि नेवी में काम करो वाले नौ जवान भी बाहर निकल आये। एक नई किस्म की बगावत देश देखने लगा इस साम्राज्य उसे नये संघर्ष के सामने साम्राज्य के पाँव उखड़ गये। मैं ये कहते हुये गौरव महसूस करता हूँ और आप सब को कहना चाहता हूँ। आजादी भारत वासियों ने जीती थी। ये किसी की देन नहीं है। इसलिए जब भारत का विधान लिखा गया तो इसके पहले

अक्षर थे हम भारत के लोग अपने को विधान देते हैं। वी द पीयुपय चह इण्डिया गिवेन टू ओरिजनल दिस कांसटीटियूशन इस विधान ने, इस विधान ने इस विशाल देश में जन राज बनाया। बुनियादी हक फण्डामेन्टल राइट जिसमें बराबरी है। मजहब वर्ग को विना लिहाज, जात के बिना लिहाज पुरूष और महिला में बराबर, सी गणतन्त्र ने पिछले चुनावों में 35 करोड़ लोगों ने वोट यिा था। ये दुनियां की सबसे बडी जमूरियत का खूबसूरत रूप था। जहाँ सब एशियाई और अफ्रीकी मुल्क आजाद होने शुरू हुये। ज्यों हि हिन्दुस्तान की धरती से साम्राज्यवाद का झण्डा उखाड़ा। उसके बाद यह भण्डा कहीं और जम नहीं सका और आज उसका हमने आखरी चैप्टर कुछ दिन पहले हाँगकाँग में देखा था। जब हाँग काँग में साम्राज्य खत्म हुआ। आजादी के सघर्ष ने तो लाल किले से शुरूआत की थी, कोई एक सौ साल पहले और यहाँ पे भी आजादी के सघर्ष के 1857 में पहली दफा बात शुरू हुई थी। फिर बाद में बर्तावनी साम्राज्य इसी किले में आई.एन.ए. के बहादुर नौ जवानों पर मुकहामा बनाया था। इसी परिभाषा में सुभाषचन्द्र बोस जी, नेता जी ने नारा दिया, लाल किला चलों, लाल किला पहुंचना, हमारी आजादी के सघर्ष का चिन्ह बन गया था। वो गीत काते आगे बढ़ते थे जवान कुर्बानी देते हुए और कहते थे.....

कदम, कदम बढ़ाये जा, ये हिन्दगी के कौम की
तू कौन पे लुटाये जा ।।

आज इसी दिवार पर खड़े होकर, जब मैं पिछले इतिहास को गौर के साथ देखता हूँ। वही मैं हिन्दुस्तान के भविष्य के मुत्तल्लक भी आपसे बात करना चाहता हूँ गाँधी जी ने जब हिन्दुस्तान के भविषय का सोचा था। तो उन्होने एक दिन स्वप्न देखं था और कहा था कि वो कि हिन्दुस्तान की असल आजादी का दिन होगा। जब इस देश का राष्ट्रपति एक दलित बनेगा। ये हमारा सौभाग्य है। कि आज इस स्वर्ण सयंती के मौके के ऊपर हम गाँधी जी के उस ख्वाब पर फूल चढ़ा रहे हैं। श्री नारायण जी के रूप में, हमारी पीढ़ी ने गाँधी जी की इस बात का और इस वचन को पूरा करके दिखा दिया। हमारे राष्ट्रपति जिन पर इस देश को बहुत फख्र है। एि निहायत गरीब दलित घर में पैदा होकर आज राष्ट्रपति भवन को एक नई इज्जत और नया मान दे रहे हैं। ये सबके लिए और भी खुशी की बात है। कि राष्ट्रपति जी को अपनी जगह और अपना मकान इस देश के बुद्धिजीवों जगत में बहुत ऊँचा है। ये भी तो हमारी डेमोक्रेसी को शान है। कि पिसे बगो को आज अपनी जगह मिल रही है। चाहे बात अल्पसंख्या की हो। मिनोरटीज की या आज शिड्यूल कॉस्ट या शिड्यूल ट्राइब की। आज हम सब मिलकर कंधे से कंधा मिलाकर देश का विकास कर रहे हैं। (खांसी) महिला हमारे देश का एक अहम अंग है। वो हमारे वर्गो में और हमारे संस्कृति में तो महिला को बहुत ऊँचा स्थान दिया है। लेकिन दुःख से कहता हूँ और अफसोस से भी। कि हमारी राजनीति महिला को बराबर का हक देने में अभी कुछ हिचकिचाती नजर आती है। एक बहुत बड़ी क्रान्ति तो कुछ दिनलों पहले हुई थी। जब पंचायती राज के चुनावों में करीबन् एक लाख महिलायें अपने हक से म्युनिसिपल कॉपोरेशन और गांव की पंचायतो की लीडर बनी थीं मैं जब कभी किसी शहर में जाता हूँ और महिला मेअर को मिलता हूँ, या महिला सरपंच को मिलता हूँ तो मुझे फख्र भी होता है, खुशी भी। और उसी में मुझे हिन्दुस्तान का भविष्य नजरं आने लगता है। आज कल कोशिश भी है और मैं दोहराना चाहता हूँ, जो बायदा मैने पक्का पार्लियामेंट में किया था और वो ये है कि मलिाओं को देश की राजनीत में पूरा हक मिलना चाहिए। आज ये बात याद रखने की है। कि कोई समाज, कोई देश आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक महिला को बराबरी का हक नहीं मिलता। यह हक राजनीतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में मिलना चाहिए। सामाजिक, चाहे मुद्दा सामाजिक हो, चाहे राजनीतिक और

चाहे आर्थिक सब जगह महिला को बराबरी मिलनी चाहिए। ये बात बदकिस्मती की है। कि आज भी घर में जब नन्ही मुन्नी बच्ची पैदा हो जाये। तो उसे कई दफा बुत माना जाता है। खानदानों में कई दफा बदकिस्मती से और अपनी ऑख के अन्धेपन से गर्भ गिरवा दिये जाते है। कि अगर पहले से पता लग जाये । कि लड़की पैदा होने वाली है। मेरी सरकार ने इस इल्लत को रोकने के लिए दो पॉलसियाँ अपनाई हुई है। एक में कि कानूनी तौर पर डाक्टरों पर पाबंदी लगा दी है। कि वो कभी न बताये कि गर्भ में लड़का है या लड़की, और दूसरे जो ये ज्यादा शायद इससे भी जरूरी है कि गरीबी की रेखा के नीचे खानदानों को सरकार आज से लेके एक फिनाशियल, माली मद्द देगी, जब बच्ची पैदा हो और बाद में जब बच्ची स्कूल जाने लगे तो उसकी तमाम पढ़ाई के लिए पैसे दिये जायेगें मै इस देश के भाइयों बहनों और सभी राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओ से और खास कर पंचायतो को चुनकर अपनी बहनों से अपील करता हूँ कि हम सब मिलकर समाज के वातावरण को बदलें। ताकि हमारे मुल्क में नन्ही-मुन्नी बच्चियों की अच्छी तरह देखभाल हो। इनको अपनी जिन्दगी सवांरने सुधारने का पूरा मौका मिले और और समाज में महिला और पुरूष का दर्जा बराबर हो। ये देश तभी महान बनेगा। जब इस देश में महिला और पुरूष कंधे से कंधा मिलाकर देश को आगे बढ़ाये। आज ये बात भी मैं कहना चाहता हूँ कि चाहे बात लड़के की हो या लड़की की। जब तक हमारी आने वाली पीढ़ियां स्कूल में नहीं जाती। तब तक समाज से और विकास नहीं हो सकता। मेरी सरकार ने सरकारी तौर पर प्राईमरी तक जाने के लिए हर बच्चे का आज ये बुनियादी फंडामेन्टल राइट मान लिया है। और ये संशोधन करने के लिए पार्लियामेंट में बिल पेश कर दिया है। अगली योजना स्कूल खोलने और तालीम का मय्यार ऊँचा करने पर जोर दे रहा है। हमारा भविष्य तभी उज्जवल होगा। जब 14 साल से छोटा हर बच्चा अपनी-2 रंग बिरंगी वर्दी पहले सुबह-2 स्कूल जाता नजर आये। न तो उसको बचपन से मजदूरी करनी पडे और न उसका बचपन उससे छीना जाये। इसके लिए मैं ये कहना चाहता हूँ कि सरकार का तो यह कर्तव्य है। लेकिन आज सब बहन भाई मिल के इसमें सरकार का हाथ बढ़ाये, मैं दुख के साथ और गम्भीरता के साथ आज आपकी तवज्जो देश की इस बीमारी की तरफ ले जाना चाहता हूँ। जिसे करपशन, रिश्वतखोरी कहते हैं। ये देश को अन्दर ही अन्दर दीमक की तरह चाट रही है। ज्यादा खतरा आज इस देश की उन लोगो को है जो ऊँची गलियों पर बैठ कर शिष्ट रिश्वत के लालच में देश द्रोही करते हैं देश के दुशमन बाहर से देश पर हमला करें। या जंग की बार करें उनसे तो निपटने की हमारी बहादुर फौजो में ताक्त है और आत्म विश्वास भी। वो तो मुश्किल से मुश्किल हालात मे भी देश की रक्षा करने के लिए जान की बाजी लगा देते हैं। लेकिन अगर कोई अन्दर से घात लगाकर रिश्वत खाकर बड़ा देश द्रोही बन जाये, तो उससे बड़ा खतरा देश को पैदा हो जाता है। ये घुन तो अब बहुत आगे बढ़ गई है। यूं लगने लगा है कि चाहे खरीदारें के मामले हो सरकारी तौर पर चाहे टैक्स की बात हो चाहे करूटम की बात हो कुछ लोगों ने ये समझ लिया है और ये मैं उनकी फिर से कहना चाहता हूँ उनको मैं वार्निंग भी दे रहा हूँ। जिन्होने ये समझ लिया है कि करपशन उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। मै आपसे वायदा करता हूँ कि कानून के लम्बे हाथ मजबूत और किये जायेगें। ताकि कोई इसकी गिरफ्त से जो क्रप हो जो रिश्वतखोर हो उससे बचकर न निकले। ये मेरा पहला फर्ज है और देश के साथ वायदा चाहे मुजरिम का ताल्लूक राजनीति से हो या सरकारी नौकरो से किसी को माफ नहीं किया जायेगा। जो ये पाप करेगा। बदकिस्मती की जरा है कि आज आम लोगों को जिन्दगी को तो छोटे दर्जे की रिश्वत और भी ज्यादा परेशान कर रही है। कोई मामूली से मामूली काम बिना किसी के हाथ गरमाए हो नहीं पाता वता चाहे पुलिस के थाने से पडता हो परवार से गाँव में शहर में म्युनिसीपलिटी से, बिजली घर से बिजली

घर से बिजली लेने में या पानी का कनेक्शन लेने में या बिगडे हुए टेलिफोन की बात हो, या जायदादर रजिस्ट्री करवाने की बात हो। बात वही पहुंच जाती है। उसी अधर्म की तरफ, उसी रिश्वत की तरफ, आम आदमी और खासकर गरीब और दरम्यिाना दर्जा का देशवासी सर टपक कर रह जाता है। जब उसको उसका माना हुआ हल नहीं मिले तो क्या करें। लाचारी बेचारगी एक दफा मैं उनके चेहरों पर लिखी हुई देखता है। क्रप्सन का ताल्लुक आज हमारे राजनीति के साथ एक और घिनौना शक्ल ले गया है। जब क्राम्म पेशा क्रिमीनिल पालिटिक्स में घुस रहे हैं। इससे आने वाले दिनों के आकास पर एक नई किस्म का बादल आ जाता है। और जब मैं ये देखता हूँ, तो मेरे अन्दर इरादे की और डिटरमिनेशन की एक नई आवाज आती है। इस, चुनौती के साथ निपटने के लिए और इसको निपटने के लिए सबको मिलके काम करना होगा। ये काम सिर्फ सरकार नही कर पायेगी। जब कैंसर बढ गया हो, तो सांझी तवज्जो उस पर देनी पड़ती है। पहली बात जो हम लोग जिनका राजनीति से ताल्लुक है । हमें मिलकर करनी है बहुत दिनो से चुनाव सुधार की बातें चल रही है कुछ किया गया है लेकिन अभी वो कम है और तो शायद दूर भी नही हो पयेगा। जब तक राजनीति चुनाव के नाम पर रूपया जमा करने की बात करती है। ये रिश्वत की खिडकी हमेशा खुली रहेगी इसलिए इसमें रिफार्म्स करना तबदीली करना बहुत जरूरी है । और दूसरे जिसकी तरफ ध्यान मैने आपको भी दिलाया वो मै कि आस क्राइम, क्रिमिनल आज राजनीति की पार्टियों से आना बाना जोड रहे हैं। इस रिश्ते की हिम्मत के साथ और क्रूरता के साथ तोड़ना है। बदक्रिस्मती से मै कहता हूँ कि आज ये इमानदारी की बात है । कि पुलिटिकल पारियाँ को दूसरे की आँख का तिनका तो नजर आता है। अपनी आँख का शहतीर नहीं। दूसरे के तो गुण्डे को तो हम गुण्डा कहते हैं और अपने बगल में बैठे गुण्डे को हम आदर, इज्जत और सम्मान देते हैं । ये सफाई कानून से तो करना ही है। लेकिन सब पार्टियों को मैं निमन्त्रण देता हूं कि हमें ईमानदारी के साथ अपने-2 दामन से झांकना पड़ेगा। आज राजनीति, राजनैतिक पालिटिक्स और पालिटीशियन के सामने ये सबसे बडी चुनौती है। अगर उसने अंस बनना है और रिडो बनना है। आने वाले दिनों का गये हफ्ते मैं बम्बे गया था, मुम्बई, नौ अगस्त की सालगिरह मानने के लिए तो मैने जनता से एक बात कही थी। जो मैं आज फिर दोहराना चाहता हूँ रिश्वत देने वाले और लेने वाले दो अलग-2 लोग होते है। लेने वाले को तो कानून की गिरफ्त से बचने नहीं देना चाहिए। लेकिन हम देने वाले जो मजबूरी में देते हैं। जब उनको कोई चारा नहीं सूझता तो क्यों न हम सब मिलके एक नई किस्म का सत्याग्रह नान कोपरेशन शुरू करें। और कहें कि चाहे तकलीफ हो, चाहे दुख हो, चाहे देरी हो। हम रिश्वत नहीं देगें। ये एक नई किस्म का सत्याग्रह होगा। ये सत्याग्रह बहुत दूर तक हमको ले जा सकता है आज हमारे बीज में कोई गाँधी जी को नैतिक्ता के कद का आदमी नहीं है। लेकिन हम सब इस देश के रहने वाले मिलकर इस खालाब को पूरा कर सकते हैं। गांधी जी की विरासत हमकों प्रेरण दे रही है। कि हम मुहल्ले में, गाँव में शहर में, ऐसी समितियाँ और एक दूसरे की मद्द करें। ताकि रिश्वत देने वाला और रिश्वत लेने वाला एक मजबूरी की हालत से बाहर निकल जाये। न जाने आपको याद है कि नहीं ये मेरी आँखों देखी बात है। जब गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह शुरू किया था। तो कुछ लोगों का ख्याल या कि ये रहम ख्याल है। क्यों नमक बनाने से साम्राज्य खत्म होते है। मुझे अपने परिवार की बात याद है। जब मेरे पिता जी ने फैसला किया नमक के साथ सत्याग्रह करने का तो उनके साथी वकीलों ने उनसे कहा था कि आप तो पढे लिखे लोग हैं। गांधी तो बुढ्ढा है, उसकी तो अक्ल चली गई है कभी नमक बनाने से सरकार चली जायेगी। गांधी जी को आत्म विश्वास था उनकी दूरंदेशी थी। दूरंनजरी भी। वो ही हुआ वो गाँधी जी के पीछे खडे हूए जो बात मुठ्ठी भर नमक से शुरू हुई थी। वो आखीर में इसी लालकिले के ऊपर से बर्तानी साम्राज्य का झण्डा उतार कर खत्म हुई। मैं अपनी तरफ से आपको वचन दे रहा हूँ कि मेरी सरकार किसी हालत में भी और किसी तौर पे भी रिश्वतखोरी के साथ कोई समझौता किसी किस्म का नहीं करेगी। अब आपको निमंत्रण दे रहा हूँ

कि आप सब मेरे साथ चले। ये एक वक्त वो था जब हमारे समाज में कोई रिश्वतखोर के साथ रोटी बेटी का रिश्ता नहीं करता था। और अपनी बेइज्जती समझता था। कि अगर किसी ने नाम, उस ऐसे रिश्वतखोर के नाम किसी नाम जुड़ जाये। आज 'हम सबको मिलाके समाज में फिर वो ही वतावरण पैदा करना है। वातवारण जो इस बात पे जोर दे न ही हम रिश्वतखोर को वोट दे। न किसी क्रिमिनल के साथ कोई रिश्ता करें और न ही हम इसी को सम्मान या इज्जत दे। हिन्दुतान की आजादी का सघर्ष में बात कर रहा था। कामयाब उस वक्त हुआ था जब युवा पीढ़ी उसमें कूद पड़ी थी। उसी कमिटमेंट में जोश था। उस जोश ने और कुर्बानी के जज्बे ने देश को आजाद कराया आज मैं फिर कुछ आप से कि इस नये सघर्ष में शामिल होने के लिए आये हम सब इस रिश्वतखोरी के खिलाफ सघर्ष में शामिल हो। अपनी-अपनी जगह अपने-अपने मुहल्ले में। कुछ बाते ऐसी है रिश्वत को रोकने के लिए जिनका ताल्लुक सरकारी पालिसियों से है। मेरी सरकार का फैसला है कि जब भी सरकारी तौर पे कोई बडी खरीदारी हो। चाहे वो डिफेंस की हो या किसी और महक्मे की। उसके तौर तरीके विल्कुल साफ, शफ्फाक ट्रांसपेरेन्ट होने चाहिए। ताकि लोगों को इसकी इमानदारी में यकीन है। आपने देखा है कुछ दिन पहले हमारे देश के रक्षामंत्री ने इस बात का एलान किया था कि उन्होने डिफेंस मिनिष्ट्री जो बहुत बड़ी खरीदारी करती है। हथियारों की, जहांजों की, और इन चीजों की उन्होने ऊँचे दर्जे को ऐसे लोगों की कमेरी बनाई है। जिसके मेम्बर ऐसे हैं जिनके धब्बे, दामन पे कोई धब्बा नहीं है और उनकी इमानदारी पर देश को विश्वास है। ऐसी कमिटिया उन सब मेहकमों और मिनिस्ट्री में बनाई जायेगी। जो बडी-2 खरीदारी के मुतआलिक पूरा ध्यान रखें और खुले बन्दों काम करेगी ताकि हरेक को इस बात पे विश्वास हो। कि उसमें कोई विक बेक नहीं है। इसमें कोई ऐसी बात नहीं है। जिसमें जरा भी बू आती हो रिश्वतखोरी की, कुछ दिन पहले मेरे निमन्त्रण पर दिल्ली में तमाम भारत के मुख्यमन्त्री आये थे। सब ने मिलके एक फैसला किया था, कि हम राष्ट इनफारमेशन अपने लोगों को देने वाले हैं। नये कानून के जरिये और उससे हर शहरी को इस बात का हक होगा कि वो किसी फैसले के मुतल्लिक किसी ठेके के मुतल्लिक, किसी खरीदारी के मुतालिक पूरी तरह अपनी इनफारमेशन ले सकता है। न ये कॉनट्रेक्ट न ये खरीदारी सीक्रेट बर्दे के पीछे छुपायी जायेगी। ये कानून बनना शरू हो गया और अगली पार्लियामेंट के सेशन में, पेश किया जायेगा। मैने मुख्यमन्त्रियों को ये भी कहा है। कि अपने यहां ऐसी सपेशल अदालते बनाये जो रिश्वत के मुक्द्दमों का तेजी से फैसला करें। कुछ रियासतों में ये हुआ है। लेकिन अभी सब जगह नहीं। मे करना बहुत जरूरी है। मैने सुप्रीम कोर्ट से प्रार्थना भी की है। कि रिश्वत के मामलों का फैसला तेजी और शक्ति से करवाने में वो मद्द करें। मेरी सरकार ने कानून सुधार करने के लिए एक एसा नेगलन कमीशन, बनाया है। जिसके जरिए वो तमाम् फिसे पिटे कानून पिन की अब जरूरत नहीं रही वो रद्द कर दिये जाऐ और साथ ही साथ कानूनों में रिफार्म भी की जायें ताकि अदालतों में मुकद्दमें जल्दी से फैसला हो सके। केवल कोर्ठ क्रिमिनिल कोर्ट बदला जाए ताकि सालों-2 तक मुकद्दमें अदालतों की फाइलों में न पड़े रहे। और ऐसे मुकद्दमें जो बांझ समझौते आपसी कर के फैसला हो सके। चाहे आरबीट्रेशन के जरिये वो कानून जल्दी से निपटाये जायें। लोकपाल बिल पर्लियामेंट के अगले सेशन में पेश कर दिया जायेगा और उससे एक और कड़ी नजर सरकारी कामों पर अड जायेगी। मैने देखा है कि सी.बी.बाई. के सामने बहुत से कमेस पड़े हैं अभी तक जिनकी शिनाख्त नहीं हो रही। या जिनकी इन्क्वायरी चल रही है। मैने अफसरान से कहा है कि ये मुक्द्ददमें जल्दी से और तेजी से निपटाये जायें। एक ओर बात मैं आज देश वासियों से कहना चाहता हूँ कि अगर आप में से किसी के पास कोई ऐसा सबूत हो, कि मन्त्रीमण्डल में कोई ऐसा व्यक्ति है। जिसको रिश्वतखोरी के मुतल्लिक आपके पास कोई सबूत तो सीधा मुझे दीजिए और मैं आपको वचन करता हूँ कि बिना लिहाज उनादमी की शक्ल के उसके मुतल्लिक पूरी तौर पे जाँच की जायेगी और कानून के जरिये उसके ऊपर एक्शन लिया जायेगा।। ऐसी आदमियों को राजनीति में हम टिकने नहीं देगें, मेरे देशवासियों। पचास साल की मेहनत के बाद हिन्दुस्तानी

कौम दुनिया के सामने एक आर्थिक ताकत न कर सामने आ रही है। कहां वो दिन थे जहां कपड़े सीने की सुई भी बाहर से आती थी और मुझे याद है, बटवारें से पहले, करांची में, हमारे शहर में एक ऐसे व्यक्ति रहते थे। जो बहुत अमीर थे और दौलत बनाई थी उन्होने, कपडे सीने की सुईयां बाहर से मगंवाकर आज वही देश पचास साल के बाद, जब अपनी इडस्ट्री अपने कारखानों और अपने कलपुर्जो पर नजंर डालता है। तो हम एक गौरव के साथ अपना सर उठाते थे। हमने राजनैतिक सवराज पचास साल पहले ले लिया था। आज हमको आर्थिक स्वराज की तरफ बढ़ना है और इस तरफ आज बढ़ने के लिए हिन्दुस्तान की योजनाऐं जिनकी नई योजना आपके सामने नाइटी। परशेन्टेज आपके सामने कुछ दिनों में आने वाली है। उसी आर्थिक स्वराज की तरफ देश को ले जाना चाहती है। हिन्दुस्तानियों की मेहनत जचास साल की मेहनत एक फल लाई है इस शक्ल में कि आज दुनिया मानके चलती है कि हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ी जगह बन गई है। मण्डी की, मण्डी इसलिए नही के हम सिर्फ माल खरीदते हैं मण्डी इसलिए कि हमारे कारखाने हमारे मजदूर भाई, हमारे किसान भाई आपनी मेहनत से देश की आर्थिक तरक्की की तरफ ले जा रही है। आज दुनिया में कोई भी देश अलग थलग नहीं रह सकता। युनाइटेड फ्रंट की सरकार ने एक सांझा मिनिमम प्रोग्राम बनाया है। प्रोग्राम बहुत बहुरूपी है और उसमें कोशिश यही है कि जहां कही हमारी आर्थिक व्यवस्था में ठहराव आ गया है और उस पर जोर दिया जाये। ताकि हम आगे बटं सकें। आपीको याद है, और आपको मालुम भी, कि पिछले पचास सालों में इस देश ने मेहनत के साथ बहुत से पब्लिक सेक्टर के कारखाने बनाये हैं हमारे देश का इसासा है ये हमारे देश की दौलत हैम। इसे देश की मजदरी बनाया है इसे देश अपनी हिम्मद से बनाया है। आज कछ मुशक्लात कुछ ऐसी कम्पनियों को हैं। जिनको सुधारने की तरफ हम चल रहे हैं। पिछले कुछ महीनों से जब से मैं सरकार में आया हूँ, पब्लिक सेक्टर की तरफ मैने खास तवज्जों दी है और दस बड़ी कम्पनियां जिनको बन्द करने की बात चल रही थी। आज उनको रिवाइव कर दिया गया है। मेरी पालिसी में है के पब्लिक सेक्टर कम्पनियों को जहां तक हो सके, फिर उनमें नई जान डाली जाये। ताकि हिन्दुस्तान को दौलत और बढ़े। और जनता के काम आयें। आज चाहे दिल्ली की बात हो, चाहे देश के बाहर की। या शहर के बाहर हम तमाम देश में देखते हैं। और समझते हैं कि नई किस्म की सड़कें बनाने की आज ज्यादा जरूरत है। कारखाने बढ़ना चाहते है। बिजली की मोर्टर चाहिए और इसलिए आज टेलिफून की बात हो, तार की बात हो टेलीकम्युनिकेशन की बात, ये सब इनफारास्ट्रक्यर की बातें है। जब तक इनकी तरफ हमारा रूख नही होता, हमारी आर्थिक तरक्की शायद आगे बढ़ न पाये। इसलिए युनाइटेड फ्रांट को सरकार फोकस कर रही है। तवज्जों दे रही है। इन मुद्दों की तरफ, हमारी उन्नति में गौरव के साथ कहता हूँ । गये साल साठ फीसदी हुई थी ये हमारे इतिहास में पहली दफा हुआ है और हससे हमारा लक्ष्य बना है ,हमारी नजर और दूर गई है कोशि हम करते हैं और चाहते हैं आपके साथ मिलकर मजदूर भाइयों के साथ मिलकर, किसान भाइयों के मेहनत के साथ मिलकर हमारी तरक्की दस फीसदी की तरफ बढ़ें। हमारा देश कृषि प्रधान देश, देश के असली ताकत तो किसान है। उसकी मेहनत और इसकी पैदावार है। इन पचास वर्षो में खाने पीने की पदार्थो की हमारे यहाँ चार गुना बढोत्तरी हुई है। इसलिए आज वो युग चला गया, जब देश की जनता के लिए बाहर से अन्न मगवाना पडता था। आज हमारी आबादी बट भी गई है लेकिन फिर भी आज फिर मैं कहता हूँ किसान का एहसासन मानते हुए कि आज फिर भी हम अपने लिए अन्वे का इन्तेजाम कर सकते हैं। कर रहे हैं गये साल आपको ये सुनकर खुशी होगी। कि किसनों की मेहनत से बीस करोड़ टन अन्न पैदा किया गया है, देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए। ये अन्न गेहूँ भी है चालव भी, खाने-पीने की पदार्थो का जिक्र तो मैने किया जिसमें एक इंक्लाब, सब्ज क्रान्ति ग्रीन रेवोल्युशन आया। इसी तरह हमारे यहां एक और क्रान्ति आई वो क्रान्ति है। सफेद क्रान्ति, दूध की क्रानति। आज हिन्दुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा दूध पैदा करने वाला देश बन गया है। इसलिए

आज हमारी तमाम तवज्जो उस बात पर है। कि अपनी खेतों से, अपने खलिहानों से हम किसी तरह पैदावार को बढ़ा सकें। इसलिए हमारा ध्यान ज्यादा उस तरफ जाता है। उन इलाकों में, जहां बारिश कम होती है। और जहां पर खेती का इनेसार सिर्फ बारिश पे रहता है। अंग्रेजी में इसे ड्राई फारमिंग कहते हैं। उस ड्राइ फारमिंग में नई किस्म के सांइस के तरीक से हम किस तरह उपज बढ़ा सकें, यह हमारी तवज्जों का फोक्स है। एक बात मैं किसान की बन्ट रहा था। लेकिन एक बात जरूरी है। कि खासकर मेहनतकश किसान उस के लिए हमें बहुत कुछ करना है। इसलिए अम्सं ने ये फैसला किया है कि एग्रीकल्चर लेबर के लिए एग्रीकल्चर में काम करने वाले किसान के लिए, खासकर बे जगीन किसान के लिए, हम ज्यादा ध्यान देगें। वो बहुत गरीबी की हालत में है। पिछड़ा। उसकी जिन्दगी की इंश्योरेंस हो जाये। ताकि बदकिस्मती कभी उसकी मृत्यु अगर हो जाये, तो उसके घर वालों को, खाने-पीने की तख्लीफ न हो। इसी तरह और भी बातें है। एगीकल्चर रिफार्म्स में। जिसकी तरफ हमारा ध्यान है। और कोशिश करेगें। कि अगले-अगले सेशन में अब पार्लियामेंट के एक कानून आ जायें। गरीबी हटाओ की बात बहुत दिन पहले की गई थी। मेरी सरकार की पालिसी अब सिर्फ इस तरफ देखती है। कि उसकी किस तरह असलियत का रूप दिया जाए। आज भी मैने कहा था कि हमारी स कृषि प्रधान देश में 60 से 65 फीसदी लोग जमीन के साथ जुड़े हैं। इसलिए ये कहना पड़ता है। दुःख के साथ, के कई प्रदेशों में अभी तक इमानदारी के साथ लैंड रिफामेस नही हुऐं और जब तक लैंड रिफाइर्नस नही होते, जब तक जिसके हाथ में हल है। जमीन उसके पास नहीं दी जाती, जत तक बे जमीन का किसान मेहनत करके अपना फल दूसरों को दे देता है। तब तक हमारे देश में उन्नति नहीं होगी। इसलिए मैं आज निम्नत्रण देता हूँ खासकर उन सरकारों को, उन प्रदेशों को जिनमें लैंड रिफार्मस अभी तक नहीं हुई है। के वो इसकी तरफ तवज्जों दे और एक ऐसा प्रोग्राम बनायें। वे एक दो सालों में इस तरफ ध्यान दिया जा सकें। गरीबी अनपढ़ता ये सब ही तस्वीर के दो तरफ और इसलिए उनको लेआना है साथ बढ़ाने के लिए, गांव में मजदूर, गांव में गरीब उन्हे सिर्फ खेती से कल्याण होना चाहिए, गांव-2 में लघु उद्योग, स्माल स्केल इन्डस्ट्री लगानी बहुत जरूरी है। बेरोजगारी का दुख हम सब को हैं और खास कर उस युवा पीढी के साथ जो पढ लिख कर भी आज बेरोजगार रहती है। इस का सिर्फ एक ही मंत्र है। बेरोजगारी दूर करने का और वो है आर्थिक तरक्की, आर्थिक फैलाव, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि हमारी अगली अगली योजना, ज्यादा ध्यान इस तरफ कर रही है। एक बात और विकास के लिए जरूरी है। के हम अपने देश में अनपढ़ता किस तरह खत्म करें। जब तक लोग उनपढ रहेगें। तब तक देश तरक्की नहीं कर सकता। किसी ने अंग्रेजी में एक दफा। कहा था। कि और मैं ये दोहराना चाहता हूँ कि :-

हम आज ध्यान इस तरफ कर रहे हैं मुझे अपने पुराने वक्त की याद है जब मतैं कालिंज में पढ़ता था। तो गांधी जी ने एक नारा उठाया था। ईच वन, टीच वन हर आदमी चाहे वो पढ़ रहा हो, चाहे वो दफ्तर में काम करता हो, या गाँव में कोई और काम करता हो। अगर हम सब लोग मिल के ये फैसला कर लें (खांसी) के इस साल, कम से कम हम एक अनप को पढ़ लिखा कर देगें। तो देश का कल्याण हो जायेगा। इसमें मैं आपकों निमन्त्रण देता हूँ कि आप सब योगदान दें। हमारे यहां कुछ प्रदेशों में ये क्रान्ति हुई। केरल की बात करे तो आन्धा की बात करू तो मिजोरम की बात करू तो, और काफी हद तक तमिलनाडू की बात करें तो वहां अनपढता से जूझा गया है। और इसलिए वहां आबादी की बढ़ौतरी में भी कमी हूई है। पढ़ीलिखी महिला खासकर इसमें हमारे बहुत हाथ बटांती है। पढ़ीलिखी महिलाको जब ये पता लग जाये। कि किस तरह बढ़ती आवादी को रोका जा सकता है। किसतरह खानदान छोटे रखे जा सकते हैं। तो फिर फिर जो खतरा हमको बढ़ती आवादी से होता है वह रूक जाता है। अभी जो कुछ देर पहले मैं आपसे

हमारे यहां सबज इंक्लाब इसी टेक्नोलांगी को वजह से आया। और आज ये गौरव की बात है। और प्राउड की कि आज हमारे साइंसदानो ने हिन्दुस्तान को वहां तक पहुंचा दिया है। कि हम अपने सेटे लाइट बना भी सकते हैं और उन्हे आसमानों में फैंक भी सकते हैं। ये आज की युवा पीढ़ी का एक नया भविष्य है। उस नये भविष्य में आज का युवा जुड़ा हुआ है। सांइस के साथ, टेक्नोलॉजी के साथ कम्प्युटर के साथ और नये-2 दृश्य देखा रहा है। हम देशों को। सबसे बडा बात, लेकिन उससे भी जरूरी और फिर मैं याद कर रहा हूँ जवाहर लाल नेहरू जी को, जिन्होने हमेशा हमारा ध्यान दिलाया था। कि ये सिर्फ बाकी नहीं है के कुछ सांइसदान और कुछ टेक्नोलाजिस्ट वो तब सब बना पाऐं हमारे लिए, उससे भी जरूरी बात ये है कि हमारे बच्चों में, हमारी युवा पीढ़ी में हमारे घरों में साइंस की सोच, साइंटेफिक टेम्पर आये। जब बिजली का बल्ब जलता देखे और पूछे कि बिजली कैसे जलती है तो उसको झिडक कर बैठा भी न दिया जाए। उसको समझाया जाये। कि बिजली बनती कैसे है। उसका इस्तेमाल कैसे होता है। जब बच्चे में सवाल पैदा होने लग जायेगें। तो फिर साइंटेफिक टेम्पर और अंधविश्वास का युग खत्म हो जायेयगा। बरसों पहले की बात है। हमारे देश में बुद्ध भगवान ने एक बात कही थी और कहा था उन्होने खुलकर अपने लोगों से कि किसी बात पर अन्धा विश्वास मत रखो। ये मत मानों क्यों कि मैं कह रहा हूँ। इस बात को मत मानो कि किसी पुस्तक मे ये लिखा है। हर वक्त सवाल करो। क्यूं? कैसे? क्या? और जब ह्वायी, ह्वाट एण्ड हाऊ का सवाल पैदा होगा। तो उसके साथ हमारे जेहन् बदलेगें। हमारी सोच बदलेगी। और देश और तरक्की कर पायेगा। आप आपके साथ ये बात सांझी करते हुए मुझे गौरव हो रहा है कि जहां दस बरस पहले इस देश ने अपना सोना गिरवी रखा था, बाहर से पेट्रोल लेने के लिए आज उसी देश के सामने हमारे पास आय 3,000 करोड डालकर हमारे खजाने में पडे हैं। ये रूपया हमारी मेहनत से कमाया हुआ है। हमारे बिजनेसमेन ने कमाया है। हमारे इंडस्ट्रीयलिस्अ ने कमाया है। हमारे इक्सपोर्टस ने कमाया है और उन लोगों ने लगाया है। जो बाहर से देश की बढ़ती हुई आर्थिक व्यवस्था पर ऐ ऐसी नजर देखते हैं। जिससे कि यहां अपने सरमायें को महफूज समझते हैं बहुत सरमाया हमारे यहां उन देशवासियों ने भेजा है। जो हिन्दुस्तान से बाहर बसे हुये है। इसलिए आज हम मिल के एक देश का नया भविष्य देख रहे हैं। जहां हम एक तरफ बढ़ रहे हैं। उसी तरफि मुझे गांधी जी की वो बात याद आती है। गांधी जी ने कहा था मैं देश को आजाद तभी समझूंगा, तभी मानुगा, कि जब हर आँख का आंसू पोछा जायेगा। ये तो बात है कि हमने कुछ आंसु तो पोंट यि हैं लेकिन इमानदारी के साथ हम मे नहीं कह सकते कि आज करोडो की आँखों में आंसू नही हैं आज इसलिए मेरे सामने सबसे बडा विषय यही है कि गरीबी पे किस तरह चोट की जाये। खासकर गरीबी शेडयूल कास्ट, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों की और उन लोगों को जो गरीबी की रेखा से नीचे हैं। चाहे उनका धर्म कुछ हो, चाहे उनका मजहब कुछ हो। इसलिए हमारे प्रोग्रामों में और प्लानों में, ज्यादा जोर इस पर था, मैने अभी जिक्र कर रहा था कि जिस वक्त देश आजाद हुआ था तो हमारी आबादी 32 करोड थी। पचास वर्षो में, ये तीन गुना बढ़ गई है। और शायद दो चार वर्षो में हम सौ करोड तक जा पहुचें। ये तो हुआ है कि अपनी आबादी के बढने के बावजूद आप देश में खाने को सबको मिल रहा है ये तो हुआ है कि इस देश में करीबन-2 एक तिहाई लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठ गये हैं और जो नीचे रह गये हैं। चाहे वो एक तिहाई है या वो 25 फीसदी है। उनकी तरफ हमको ध्यान देना है और इसी बढ़ती आबादी को रोकने के लिए मैने आयी कहा था, कई कारण हमको मालुम है और सबसे बडा मालुम जो मालुम है हमको वजह वो गरीबी तो है ही क्यों कि गरीबी अनपढता महिला का दर्जा ये सब मिलके देश की आबादी को बढने क तरफ ले जाते हैं। इसलिए आप हमारे सरकार ने एक नया कानून बनाने की तरपु जा रहे हैं और नया दृश्य दिखाने के लिए कि आने वाले दिनों में एक नेशनल पांपुलेशंन पालिसी आपके सामने लौट जायेगी। आप मेरा ध्यान उन सब गंदी बस्तियों की तरफ जाता है। मेरा ध्यान जाता है स्लम्स की तरफ, जहां लोग जिन्दगी गुजारते हैं गंदगी

मे साथ हो साथ मेरा ध्यान जाता है पल्युशन की तरफ सड़को में उडते धुऐं की तरफ, जिससे हमारे बच्चों को सेहत पर असर पड रहा है। कई बरस पहले मैं स्वीडन गया था, जब पहली दफा दुनिया ने ये सोचा था कि पाल्युशन खत्म होना चाहिए, उस वक्त हमारा ख्याल था कि गरीबी सिर्फ पल्युशन पैदा करती है। आज हिन्दुस्तान में हम देखते हैं कि हम एक शिकजें में फंस गये हैं एक तरफ पल्युशन, गरीबी पैदा करती है तो दूसरी तरफ वो लोग भी पैदा करते हैं। जो खाते-पीते लोग हैं उनकी कारें धुआ छोडती हैं वो इस तरफ ध्यान नहीं करते अपने इलाकों के गन्दा रहने पर वो कोई एतराज नहीं करते और इसलिए आप जब तक हम मिलकर इस शिकंजें को ताडने की कोशिश नहीं करेंगें और पाल्युशन के खिलाफ युद्ध नहीं करेंगें, तो देश में गंदगी खत्म नहीं होगी। बिमारी खत्म नहीं होगी। सरकार ने दरियाओं की नदियों की सफाई के लिए झीलों के पानी को उज्जवल करने की कई पाल्सियां बनाई। किसी हद तक वो कामया भी हुई लेकिन अभी काफी काम करना बाकी है। लेकिन फिर मैने वहां कि मे सरकार तो नदियां साफ करती रहे और हम नदियों के गन्दा करते रहे हर वकत तो फिर बात बन नही पायेगी। इसलिए हम सबको जनता के जागरूक करते एन्डी पॉल्युशन कैमेन ये देखे कि न तो कारखानों से धुआ निकले न फर्टीलाइजर और इन्सेक्टी साइडियर का इस्तेमाल किया जाऐ। जैटियोब धरी में जब अन्दर चला जाता है तो स्वच्छ पीने के पानी को मिलना मुश्किल हो जाता है इसलिए आज कई जगह साफ पानी पीने की मुश्किल बढ रही है लेकिन फिर भी यहां हमने मुकम्मल एनवायरमेंट की पालिसी अपनाई है आप मेरी सबसे बडी प्रायेरटी और सब से पहला चैलेंज जो नाइंथ प्लेन के सामने है। वो मैं कि हिन्दुस्तान को रहने वाले हर आदमी को स्वच्छ पीने का पानी दिया जा सके। इसी प्लेन के अन्दर, समाय के कुछ पिछडे अंगों में यहं हमें सफाई कर्मचारी खासकमी की बात करना चाहते हैं तो आप ये समाज के सबसे पिछडे हुए अंग हैं और उनको सफाई इंसाफ नहीं मिला। सरकार ने एक सफाई कर्मचारी कमीशन बनाया है इस तरफ देखने के लिए और सफाई कर्मचारियों को अपनी जगह दिलाने के लिए और खासकर उन तमाम गंदी इल्लतों को दूर करने के लिए जिसमें इन्सान के सर पे अगर गंद रखा जाता है तो उससे बडी बेइज्जती आदमी की की नहीं जा सकती। इसलिए सफाई कर्मचारियों को तरफ हमारा खास ध्यान रहेगा। हमारा ध्यान पिछडे गरीब तबकों के उत्थान पर तो केन्द्रित है और रहेगा, यहां से ही यहां से ही, एक नया आर्थिक स्वरूप शुरू होगा। आर्थिक स्वराज इकनामिक इडिपेंडेंस उस वक्त आयेगी जब पिछडे वर्ग के लोग सफाई कर्मचारी, शेडयूल कास्ट्स शेडयूल ट्राइब के लोगों को समाज में अपनी जगह मिलेगी, आपने देखा है कि सरकारी दफ्तरों में कई दफा एतराज होता है कि फिजूलखर्ची ज्यादा होती है। रूपया ज्यादा बैस्ट किया जाता है। मैने ये फैसला किया है। कि इस साल हम इक नया कमीशन बनायेगें, कुछ लोग बैठ के इस तरफ ध्यान करें। मैं कुछ मिनट आपके लेना चाहता हूँ। हिन्दुस्तान की विदेश नीति के बात करने में यूं तो आप जानती है कि आजादी के सघर्ष के दिनों में ही गांधी जी ने, जवाहर लाल जी ने, एक हमारी नीव रख दी थी। गांधी जी के मुतल्लिक ये हमेशा कहा जाता है वो जहां उनका जिस्मानी जन्म तो हिन्दुस्तान में हुआ था। उनका पुलिम्बिल जन्म अफ्रीका मे हुआ था। इसलिए अफ्रीका के काले रंग के लोगों को साथ हमारा गहरा जज्बाती रिस्ता रहा है और हिन्दुस्तान में पढ अपनी आजादी आई तो उस वक्त भी हमने ये कहा था पचास बरस पहले कि आफ्रीकी एशियाई देशों को आजादी हमारी आजादी का अंग रहेगें और आप ने देखा एक एतिहासिक वक्त कि ज्यूंन्ट हमारे यहां से गुलामी क्यों यहां से जब साम्राज्य गया त्यूं, त्युं एक-2 करके अफ्रीका और एशिया में सब देश आजाद होने शुरू हो गये। सब आजाद देशां ने मिलकर एक संस्था बनाई जिसके नाम का नाम नेम नेम का नाम दिया गया, हमारी विदेश नीति के आजाद जवहार लाल नेहरू जी ने कर दी थी और उन्होने कहा था कि किसी आजाद मुल्क की फारेन पालिसी हमेशा आंजाद रहेगी। इंडीपेंडेस फारेन पालिसी हम इसलिए किसी गुटबंदी में नहीं गये। जब देश गुटबन्दियों में ये हुआ था देश और परदेश हम उस तरफ ध्यान कर रहे थे कि विदेशों को किसी गुटबंदी में हम न जायें। इस स्वतन्त्र भारती पालिसी

को हम गौरव के साथ देखते हैं। और इसकों हमने संभाल के रखा है। इसी नाते आपको याद होगा कि मैने, सी.टी.बी.टी. पर दस्तख्त करने से इंकार कर दिया था और आप भी हम इस बात पर कायम हैं कि किसी दबाव में भी हम सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत नहीं करेगें। जब तक इस किस्म के अध्यादेश बराबरी से नहीं होते और जब तक वो देश जिनके पास 'न्युक्लियर' हथियार हैं। वो अपने हथियारों को खत्म करने की बात नहीं करतें। भारत की विदेश नीति को मुझे गौरव के साथ कहना पड़ता है। मैने एक नया मोड़ दिया। इस मोड़ के नाम का कई दफा अखबारों ने और बुद्धिजीवियों ने गुजराल डाक्ट्रिक कहा है इस के नाते हम ने ये बात कही है। कि हम अपने पड़ोसियों के साथ अपने रिश्तों को सुविकारना चाहते हैं और उस पर हम बढ़ भी रहे हैं। लेकिन एक बात ध्यान रखिये वो ये कि चाहे रिश्ते बनते भी हो किसी किस्म के भी हम अपनी सिक्योरिटी के साथ कोई समझौता किसी से नहीं कर सकते। हमारी फौजों ने कई दफा ये साबित कर दिया है कि जब कभी उनको चुनौती मिली, तो उन्होने पूरी शान के साथ हिन्दुस्तान के झण्डे के सम्भाला है लेकिन हिन्दुस्तान की इतिहास में और खासकर जहां मैं यहां से बात कर रहा हूँ। एक हमको सबक दिया है और वो ये कि पुराने दिनों में भी हिन्दुस्तानी कभी इसलिए नहहं हारे कि उनमें बीरता की कमी थी, जब भी हारे वो इसलिए हारे कि उनके हथियार दूसरों के मुकाबले में पीछे थे। मुकाबला तोप से या तो हमारे पास तलवार थी। मुकाबला हो नही सकता था। बीरता से हम मर तो सकते थे। हमारी महिलाये जौहर तो कर सकती थीं। लेकिन आखिर मुठ्ठी पर लोगों की तरफ होती है मै आपसे एक बात का वचन लेने आया हूँ कि ये हम कभी फिर नहीं होने देगें। हमारी छत्र सेना चाहे वो नेवी की हो, चाहे वो वायु सेना हो चाहे फौज हो, उनके साथ मेरा एक वचन है। वायदा है। कि हथियारों की टेक्नोलॉजी में उनकों किसी से पीछे नहीं रहने दिया जायेगा। और ताकि जहां वो अपनी जान से खेलते हैं वहां वो दुनिया की आँख में आंख मिला के देख भी पाये। आप हमारे साइंस दान और टेक्नोलॉजिस्ट ऐसी चीजें बना पाये और बना रहे है। कि जिनके लिए हमको बाहर के ऊपर सहारा नहीं रहा है दनिया के अन्दर ठंडी जंग तो खत्म हो चुकी है। पुराने दोस्त आज दुश्मन बन रहे हैं। इसलिए मैने अपनी पालिसी का इनेसार किया है। रिड्यूल कारपोरेशन के ऊपर। हम लोग इस दक्षिणी ऐशिया में रहने वाले सात मुल्क। हम ये मिल के मानते हैं कि अगर हम सांझी वाद के साथ आगे बढ़े। तो ये तमाम डलाका दुनियां के मुकाबले में खड़ा हो सकता है। आपने देखा इन दिनों में हमारे बंगलादेश के साथ नई किस्म के ताल्लुकात बने हैं दोस्ती के मित्रता के। हमारे ताल्लुकात श्री लंका के साथ बहुत सुधरे, नेपाल के साथ हमारे पुराने, प्राचीन रिश्ते भी है। लेकिन आज उसमें एक नवीनता भी आई है। भूटान और मालद्वीप के साथ भी नई किस्म की दोस्ती, मित्रता का वातावरण नजर आ रहा है। इसलिए इसमें हमने इक नई बात शरू की है। सबरिजनल को-ऑपरेशन 'नैपाल, बांग्लादेश, भूटान और हमारी सात रियासते जो आसाम के साथ-2 0 सी हुई है। हम सब मिलके एक दसूरे की तरक्की में एक दूसरे की मद्द कर सकते हैं। और वो इलाका जो पिछड़ गया था। देश के बटवारें के वक्त, फिर से आगे आ सकता है। आज मैं खुशी के साथ आपको ये कहना चाहता हूँ कि पिछली कुछ दिनों से नागालैंड शांति की तरफ बट रहा है। तीस बरस की खानाजंगी के बाद आज वहां सीज फायर हुआ है और मुझे उम्मीद है कि आने वाले दिनों में नार्थ-ईस्ट के तमाम इलाकों में शांति का बातावरण पैदा किया जायेगा। लेकिन एक बात साफ रहनी चाहिए और ये बात हम सबको साफ होने चाहिए, कि टेटीरिज्म के साथ किसी किस्म का समझौता नहीं किया जायेगा। जो लांग बन्दूक उठा के बात करना चाहते हैं उनका जवाब सख्ती से दिया जायेगा। लेकिन हमारे युवा पीढ़ी के कुछ लोग, जो दूसरों के बहकावे में आके उस रस्ता, रास्ते चले गये है। हम उनकी वापिस अपने बच्चों की तरफ फिर से छाती से लगाना चाहते हैं वो हमारे बच्चे है, हमारे खून का खून

है हमारी हड्डी है। हमारे हैं। अग. वो बन्दुक फेक दें और देश में अपना हक मागना चाहें देश के अन्दर तो हक उनका पूरा किया जायेगा। आज एक मिनट में पाकिस्तान के मुतल्लिक भी बात करना चाहता हूँ। पिछले दिनों आपको पता है कि भारत और पाकिस्तान के आपसी सम्बंधों में कुछ सुधार आया है। ये किसी हद तक तसल्ली की बात थी। विदेश सेक्रेट्रियों में आपस में बात हो चुकी है और कोशि ये है कि अगले महीने फिर बात हो और आप दोनो तरफ से हम सोच रहे हैं और देख रे हैं कि पचास साल की लड़ाइयों में यहां हिन्दुस्तान ने अपना किरदार नियामा है। आज हम शान्ति की तरफ कदम बढाना चाहते हैं हिन्दु-पाकिस्तान दोस्ती हमारे देशो को फायदा तो देगी साथ ही साथ साउथ एशिया के तमाम मुल्कों के भी इससे फायदा होगा। और हम सब मिलकर सातों देश गरीबी और पिछडापन के खिलाफ चोमा ले सकते हैं। मैने भारत की तरफ से कहना चाहता हूँ और मैने कहा भी है कि हम अपने पडोसियों के साथ, पाकिस्तान के समेत अच्छे ताल्लुकात और मित्रता का वातावरण पैदा करना चाहते हैं। लेकिन ये मानके चलना चाहिए, कि मित्रता देशों में तभी होती है कि पक्ष एक दूसरे के अंदरूनी इंरनल अफेयर्स में कोई दखलन न दिया जाये और दूसरे के एक दूसरे की सरहदों की इज्जत की निगाह से देखा जाये। आज हिन्दुस्तान ने जहां ये साबित किया है कि वो देश की स्वाधीनता और एकता और कठेग्ररी की रक्षा कर सकता है और करता रहेगा। वहां ही हमारी सैक्युलर यूनिट और हमारी इर्टेग्रटी पर कोई समझौता इस कीमत नही किया जा सकता। हम दोस्ती चाहते हैं मित्रता चाहते हैं लेकिन अपनी इर्टेग्रटी और अपने देश की सरहदों की रक्षा करते करने के साथ यह एक खुशकिस्मती की बात है कि जम्मु कश्मीर की रियासत में बातावरण बदला है और उग्रवाद के साथ जो जिस तरह झूझ गया । आज वहां टेरिज्म के पांव उखडे आज जनता की चुनी हुई सरकार वहां फिर अपने काम करने में जुटी है। इसलिए आज मैं ये बात कह के तसल्ली करता हूँ कि कश्मीर के बदले हुए वातावरण में आज कश्मीर फिर से स अंधेरे काल में, जो पिछले पांच-सात बरसों में टेरेरिज्म में पैदा की थी। उस तरफ अपना मुह मोड़ लिया है। कामयाबी तब हुई है। जब रियासत के लोगो ने नौजवानों ने महिलाओं ने, मजहबों से ऊपर उठ कर हिन्दु मुसलमान ने सब ने आज टेरेरिज्म के खिलाफ मोर्चा लिया है। इसलिए आज मैं अपने पडौसी देशों से दो बाते कहना चाहता हूँ। आइये हम सब मिलके एक दूसरे से वायदा करे कि हम एक दूसरे के अन्दरूनी मामलात् में दखल नही देगें। और एक दूसरे की सरहदों की इज्जत करेगें, एतराम करेगें। आज मैं फिर से दोहराना चाहता हूँ हिन्दुस्तान पडौसियों को आगे बढाने के लिए आर्थिक तौर पर कई किस्म की रियायतें दे सकता है और देगा। लेकिन इसमें न ही तो सांग्रेरज के मामले के ऊपर और न ही टेरेरिज्म के ऊपर और नही सेल्युलर यूनटी के ऊपर, कोई समझौता किया जा सकता है। हमारी विदेश पालिसी ने हमारे पडौसी देशों से नई किसम के रिश्ते और भी सुधारे हैं चाहे ये बात एशियान, देशों की करू, अफ्रीका देशों, अफ्रीका देशो की करू, रूस की करू, चीन की करू, जापान की करू, कोरया की करूं सब के साथ हमारा सुधार हुआ है। चीन के साथ हमारे रिश्ते सुध रहे हैं। मधुर हो रहे हैं और इसी के साथ ही साथ हम देख रहे हैं। कि हमारे रिश्ते योरोपी ताकतों के साथ और भी, उभर कर सामने आये हैं और आज योरूपी ताकतों की आर्थिक व्यवस्था एी है कि वहां से बहुत बड़ी इनवेस्टमेंट हमारे मुल्क में आ रही है। अमरीका के साथ हमारे ताल्लुकात जरीनाबी बे पुराने भी हैं और दोस्ती के भी उसी नाते हमारे आर्थिक रिश्ते मजबूत हुये है और हम उन्हे और मजबूत करना चाहे हैं एक बात एक संदेश में भारत बाहर बसे हुये भारत बासियों को कहना चाहता हूँ जो हमारे मुल्क से दूर रहते हैं और उनको हमारे देश की उपलब्धियों पर नाज हो फक्र हो और उनको अपने मातृभूमि से प्यार है इसलिए मेरी सरकार कई किस्म की नई सहूलते उनको देने जा रही है और वे है। आने-जाने की सहूलते बीजा की सहूलतें यहां जायदाद बनाने की सहूलतें, बच्चों को यहां पढ़ाने की सहूलतें ताकि इस तरह हमारे वो जज्बातों रिश्ते अममोगनल रिश्ते और भी मजबूत रहे। बात खत्म करने से पहले यहां मैं एक दफा फिर से सारे देश को बधाई देता हूँ।

Before Concluding, and I am Saying to those friends, Who may not have understood me in the language in twice. I was taking. I only want to say, I greet to you all on this very happy occassion, when India is finishing half a Centuary of its Republic and entering in New Era, Era of progress, Era of peace, Era of a leadership, in which it wants to be a fourth country in Economic development, in industrial development in Agricultural development. It also wants to be an Exampil in the world over in Social Justice. It wants to uplift all those section of society, which have not been given their faredeal. We shall give them fair deal and may also repeet. What I have said in Hindi that our war against. Curruption is whole honest and CAndit and for this. We have to build a mass movement, in which we all can join, so that curruption both in politics to politicions and also in public life must end, and the same time, this movement not give a focus on the small curruption in a police station. In villages, in Governement offices, wse will must start a new type of Satyagraha that 'Satyagraha', non Co-operation, with the warus who are currupt, refuse in to give curruption it need courage. So it is difficult, put let us bear it. Gandhi J' maid heritage is this the non-co-operation, can achive wonder, let us achieve it once again and also on this occassion once again. I want to express my feeling of greatuch to the freedomfighter, and on behalf of Nation. I want to thaink them, and also appreciate their Sacrifices, also tell them that as a sence of gratitute and other in that it is a feeling of gretitut, the United Governemtn is decided whatever small neeger what is Called 'Peusheen is given to them. It is being double from today and also, it is beeing linked with D.A. index, so that it is the prices go up so shall be their peushon. I hope and I prey that the veterein Freedom Fighter will accept the Nation's small gift on this happy day. Last year standing from here my worthy colleague Shri Deve Gowda J' had promised about Uttarakhand. I want to repited that promise. We will take needed staps in this direction very soon

और आज फिर आखिरी बात और फिर से ध्यान देश की एकता की तरफ and in end. Once again our attention to national unity to Secularism to our shared Civiligation, to our commen Civilization सांझी संस्कृति मुश्तरफा गंगा-जमुनी तहजीब

We the Ninty Six Crore Indians profacing different Religions, speaking different languages, living in different part of India, Moving different historical divisions. We are one, We shall remein one

हम एक हैं एक रहेंगें। मैं हारा संदेश है इस स्वर्ण जयंती के दिन हम सब We all moving together are now standing on the thres hold of grateness. India is about to enter this new edifice of gratness and the grateness is waiting for us. It is wating for our Future in new Generation.

आज हम मिल के यह वायदा करें देश के साथ के हम ऐसा देश बनायेंगें जिसमें एकता होगी। जिसमें विभिन्नताऐं तो रहेगीं जारे हम अलग-2 भाषायें तो बोलेंगें। लेकिन हम एक रहेंगें। हम अपने-अपने धर्मो की अनुयायी रहेंगें। हम एक रहेंगें। हम ऊँच-नीच को खत्म करेंगें। हम एसा देश बनायेंगें। जिसमें कोई नीचा न हो। कोई ऊपर न हो और एक एसा देश बनायेंगें खासकर जिसमें महिला को सम्मान मिलेगा और उसको अपनी जगह मिलेगी।

We shall make a country is a Country of equals, A Country which is socially just, A Country where women gets her status where the schedule cast, schudule tripes minorities. Occupy a place of pride.

इसलिए आज वही गीत जो हमने रात को गया था। मेरे मन में आता है /सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' और बात खत्म करने से पहले क्यों कि मैं लाल किले से बात कर रहा हूँ और ध्यान कर रहा हूँ नेता जी की जिन्होने देश को एक नारा दिया था आप सब मेरे साथ मिल के पूरी आवाज के साथ पूरे जोश के साथ पूरी हिम्मत के साथ बडें हो बूढ़े हों बच्चे हो हम सब तीन दफा कहें जय हिन्द (पब्लिक) जय हिन्दी जय हिन्दी (पब्लिक) जय हिन्द जय हिन्द (पब्लिक) जय हिन्द

धन्यवाद